International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 23-10-2020; Accepted: 08-11-2020; Published: 25-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 85-89

मृदुला सिन्हा के उपन्यासों में नारी की पारिवारिक स्थिति

डॉ. लोकेन्द्र कुमार[1], श्रीमती उर्मिला देवी पाटीदार[2]

[1] असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, बांसवाडा, राजस्थान, भारत

[2] शोधार्थी, श्री गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाडा, राजस्थान, भारत

सारांश

परिवार समाज की प्राथमिक संस्थाओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्था है अर्थात परिवार को प्रथम पाठशाला तथा माता को प्रथम गुरु कहा गया हैं। माता ही संतान के उन्नति रूपी वृक्ष को अपने संस्कारों से सींचती है। नारी परिवार का आधार होती है। नारी ही वह धुरी है जिस पर परिवार टिका रहता हैं।

हिंदी के संपन्न महिला रचनाकारों में मृदुला सिन्हा का नाम अत्यधिक प्रभावशाली है। इनका रचना स्थल सिर्फ स्त्री जीवन ही नहीं अपितु स्त्री स्वातंत्र्य, स्त्री अस्मिता, स्त्री शोषण इत्यादि विषयों में मात्र सीमित न रहकर सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक, राजनैतिक, पारिस्थितिकी एवम् धार्मिक परिवेश को भी गंभीरता से लिया है। उन्होंने स्त्री को परिवार का आधार स्तम्भ बताया है। वे भारतीय परिवार व्यवस्था में विश्वास करती है और कहती है "स्त्री सशक्तीकरण, पुरुष सशक्तीकरण, बच्चा सशक्तीकरण और वृद्ध सशक्तीकरण नहीं परिवार सशक्तीकरण के उपाय ढूंढने चाहिए।"

परिवार में स्त्री दोहरी भूमिका निभा रही है। वह माँ, पत्नी, बहू आदि की भूमिका के साथ – साथ बेटी व बहन आदि के स्थान पर भी हैं। पुरानी परम्पराओं के अनुसार उसे पुरुष पर ही आश्रित रहना पड़ता था। वह बचपन में पिता युवावस्था में पति तथा वृद्धावस्था में पुत्रों पर आश्रित रहेगी और इस प्रकार वह कभी स्वावलंबी नहीं बन सकी।

मूल शब्द: मृदुला सिन्हा, उपन्यास, नारी, पारिवारिक, स्थिति, पुरुष, शक्ति, संघर्ष, जीवन, त्याग, सेवा

प्रस्तावना

पारिवारिक स्थिति

पहले एक साथ एक परिवार में तीन पीढियाँ रहती थी । इनका जिम्मा था संस्कारों को पीढ़ीगत हस्तांतरित करना । इन संस्कारों के मार्फत पारिवारिक हुनर का भी हस्तांतरण होता है मृदुला सिन्हा के अनुसार तीन पीढ़ीयाँ साथ रहनी चाहिए -

> "संग चले जब तीन पीढ़ीयाँ, चढ़े विकास की सभी सीढ़ीयाँ ।" [1]

प्रत्येक राष्ट्र की प्रगति एंव विकास में स्त्री - पुरुष का समान सहयोग होना आवशयक है । नारी घर परिवार की शोभा है, समाज की शोभा है और राष्ट्र की शोभा है । प्रकृति के बिना पुरुष का कार्य अपूर्ण होता है तो नारी के बिना नर का जीवन भी अपूर्ण है । जीवन रूपी गाड़ी के दोनों पहिये भी समान होने चाहिए । गाड़ी का एक भी पहिया कमजोर हो तो गाड़ी खींचना असम्भव होता हैं । उसी प्रकार पारिवारिक जीवन में भी दोनों के बीच समरसता आवश्यक हैं । कन्या, पत्नी, गृहणी, सहचरी एवम् माता के रूप में स्त्री प्रेम की मूर्ति एवम् त्याग की प्रतिमा होती हैं । शथपथ ब्राहमण एवम् महाभारत में स्त्री को पुरुष की अर्धांगिनी कहा गया हैं । शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप की कल्पना भारतीय समाज में प्राप्त नारी का समादरणीय स्थान एवम् पूज्य भाव का घोतक हैं ।

पिछले कुछ दशकों से आए स्त्री जीवन की नई क्रांति की रोशनी में स्त्री - पुरुषों के साथ एवम् उनके बराबर कार्यालय के काम, प्रशासन खेल, पढाई, डॉक्टरी, फौज एवम सेना के तीनों विभागों, पुलिस महकमो, टेक्नोलॉजी, विज्ञानं अन्तरिक्ष यात्रा आदि अनेकानेक क्षेत्रों में काम करते हुए स्त्री ने अपना वर्चस्व स्थापित किया हैं किन्तु इसके बाद भी अधिकतर संख्या में स्त्री पति पर निर्भर रहती है । पुत्र जन्म आज भी महत्वपूर्ण हैं । बेटी पैदा होने पर भ्रामक स्थिति आज भी व्याप्त हैं । भ्रूण हत्या का अत्यधिक प्रतिशत आज भी समाज में बेटी हेतु ही होता हैं । आवश्यकता है कि अपने मन में अपनी जाति के प्रति उच्च

भाव रखे एवम् पुत्री को जन्म देने में हिचकिचाए नहीं । घर-परिवार, स्त्री - पुरुष, पति- पत्नी, सास - ससुर एवम् बेटी के लहू से हाथ न धोए ।

समाज और परिवार के दबाव से घर बाहर नारी की जिन्दगी बड़ी कारुणिक हो उठती हैं । घर में उसे सेवा, त्याग, करुणा एवम् सहनशील पत्नी और माता की भूमिका निभानी पड़ती हैं । स्त्री को दी गई भूमिका में पति व परिवार के प्रति एकनिष्ठ समपर्ण हैं । एक स्त्री के लिए इसका परिवार ही सब कुछ होता हैं । पति के इर्द गिर्द सिमटी दुनिया ही उसका परिवार हैं । जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य किसी न किसी परिवार से जुडा रहता हैं । परिवार में स्त्री पुरुष का सहयोग होना जरुरी हैं ऐसा न होने पर पति- पत्नी में टकराव, वैमनस्य और आपसी संघर्ष के कारण पारिवारिक विघटन हो जाता हैं । और इसका असर ज्यादातर बच्चों पर ही पड़ता हैं । बच्चे सदा अपने माता - पिता के आचरण का अनुगमन करते हैं । अत: परिवार में माता - पिता की भूमिका सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं ।

पारिवारिक जीवन में भावना और भावनात्मंक सम्बन्ध अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते हैं । पति- पत्नी के सहयोग से ही दाम्पत्य जीवन का निर्वाह होता हैं । परिवार में नारी का स्थान सर्वोच्च रहा हैं । पत्नी का रुप धारण करना नारी के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण कदम हैं । वह सच्चे दिल से अपने पति के साथ ही उसके परिवार वालो की सेवा करती हैं । स्त्री परिवार का विरोध नहीं करती । उसका स्त्रीवाद घर परिवार जैसी सस्थायों का विरोधी नहीं हैं । वह पुरुषसत्तात्मक समाज में नारी की दयनीय स्थिति में परिवर्तन चाहती हैं । पति-पत्नी के बीच का दाम्पत्य जीवन ही परिवार को संगठित करता हैं । किसी कराणवश इनमें दरार आ जाती हैं तो परिवार में विघटन होने लगता हैं लेकिन पारिवारिक विघटन का अर्थ केवल पति-पत्नी के रिश्ते का विघटन ही नहीं वरन परिवार के प्रत्येक सदस्य चाहे वह माता- पिता हो या भाई - बहिन सभी के संबंधों में परिवर्तन पारिवारिक विघटन में बदल जाता हैं ।

नारी की स्थिति पर चिंतन

हिन्दी साहित्य में महिला उपन्यासकारों ने नारी की नियति पर गंभीरतापूर्वक विचार किया हैं स्त्री की दशा पर अनेक समाज सुधारकों एवम् महिला साहित्यकारों ने चिंता व्यक्त की और यथा संभव दूर करने का प्रयास किया । आठवे दशक की महिला लेखिकाओं में ममता कालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, चिंता मृकुल, मणिक मोहनी, मृदुला गर्ग, मृदुला सिन्हा, मंजुला भगत, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पाण्डेय, नासिरा शर्मा, दिप्ती खंडेलवाल, कुसुम अंचल, इदु जैन, सुनीता जैन, प्रभा खेतान, क्षमा शर्मा, अर्चना वर्मा, नमिता सिंह, अल्का सरावगी आदि ने नारी मन की गहराइयों, अंर्तद्वन्दों तथा अनेक समस्याओं का अंकन संजीदगी से किया हैं ।

नारी जीवन की वास्तविकता को प्रदर्शित करती कुछ पंक्तियां -

"माँ बाप ने पैदा किया था गुंगा
परिवेश ने लंगड़ा बना दिया
चलती रही परिपाटी पर
बेसाखियाँ चरमराती है ।
अधिक बोझ से अकुलाकर
विस्कारित मन हुंकारता है
बैसाखियों को तोड़ दु" [2]

"स्त्री की स्थिति अधीनता की हों स्त्री सदियों से ठगी गई हैं और यदि उसने कुछ स्वतंत्रता हासिल की तो बस उतनी ही जितनी पुरुषों ने अपनी सुविधा के लिए उसे देनी चाही । यह त्रासदी उस आधे भाग की है, जिसे आधी आबादी कहा जाता हैं ।" [3]

मृदुला सिन्हा के उपन्यासों में नारी की पारिवारिक स्थिति

मृदुला सिन्हा भारतीय जीवन शैली की अनुगामिनी व्याख्याकार एवम् प्रतिष्ठापक है इसका प्रमुख कारण यह है कि वे स्वयं स्त्री हैं । वे भारतीय स्त्री चरित्र का प्रतिनिधित्व करती हैं । नारी अस्मिता केवल स्वयं को प्रतिष्ठित या स्थापित करने में व्यक्त नहीं होती वरन सम्पूर्ण परिवार, समाज और उसके सम्बन्धों के निर्वाह में व्यक्त होती हैं जिसे मृदुला जी ने अपनी उपन्यास यात्रा में बखूबी से चित्रित किया हैं । वे अपने उपन्यास साहित्य में घर परिवार की स्थापना और समृद्धि में स्त्री को बड़ा महत्व देती है । उनका नारी विषयक चिंतन भारतीय चिंतन पर आधारित है। मृदुला जी नारी को पुरुष के समान बनाने की बजाय मातृत्व से मंडित करती हैं । उनके विचारानुसार नारी को पुरुष के समान बनने की जगह नारीत्व से पूर्ण बनने की जरूरत है । नारी कभी पुरुष के समान हो ही नहीं सकती । वह तो पुरुष से भी श्रेष्ठ है क्योकि वह त्याग व सेवा की प्रतिमूर्ति के साथ - साथ दातृ हैं ।

"घरवास" उपन्यास में कालिया के गृह प्रवेश की कामना पूर्ण करने के लिए उसके पति विलोचना ने यातनाएँ सहते हुए अपने सच्चे अनुराग को प्रकट किया है । कालिया के संघर्षपूर्ण जीवन में उसके घरवास की कामना पूरी नहीं हो सकी परन्तु वह एक ममतामयी माँ, त्याग व समर्पण की प्रतिमूर्ति तथा पतिव्रता नारी के सभी गुणों का समावेश लिए हुए है । विलोचना ने पुछा, "पैसे कहा से लाई ?" कालिया ने जवाब दिया, "तुम्हारे लाये रुपयों में से पांच रूपये अलग

रख दिए थे । छठ व्रत तो करना ही था न ! एक दिन भूखे रहकर भी । पंजाब में तुम थे तो मनौती मानी थी - तुम राजी - ख़ुशी लौट आओगे तो इस बार मैं भी छठ व्रत करुँगी । सो कर रही हूँ ।" [4]

इस उपन्यास में ठाकुर साहब के अत्याचारों को सहते हुए उनकी पत्नी व माँ लाजपरी के पारिवारिक जीवन के कड़े संघर्ष को उजागार किया है । ठाकुर अपनी पत्नी को पिटते हुए कहता है - "जा - जा, कल ही नैहर चली जा । दरिद्दर की औलाद! मुझे ही सिखाने चली है । बड़े- बड़े गए तो गजऊ आए । पिऊँगा शराब, जाऊंगा वेश्या के यहाँ । चार - चार रखैल रखूँगा । तुम क्या कर लोगी? तुम्हारे बाप की कमाई लुटाता हूँ क्या? उससे तो एक मोटर साईकील भी न दी गई । अपनी कमाई अपनी दरिद्दर की बेटी मुझे सीख सीखा रही है ।" [5]

मृदुला जी का उपन्यास " ज्यो मेहँदी को रंग " निशक्तता की पीड़ा का जीवन्त दस्तावेज हैं । इस उपन्यास में नवविवाहित शालिनी को उसके ससुराल में भरपूर प्यार व् स्नेह मिलता हैं । वह पति और सास के आखों की पुतली है। उसकी सास उसके पायलों में संगीत के आरोह - अवरोह को महसूस करती हैं । जिन्दगी के खुबसुरत पहिये को किसी की नजर लग जाती है ओर शालिनी नौकाविहार के दौरान पैर कटने से विकलांग हो जाती हैं । व्यक्ति का शारीरिक रूप से विकलांग होना उतना पीड़ादायक नहीं हैं जितना मानसिक उपेक्षा व चोटों से आयी विकलांगता पीड़ा देती हैं । शालिनी का यह कथन उसके मानसिक मजबूती को उद्धटित करता है जब वह अपने पति राजेश से कहती हैं - "क्या हुआ जो हमारे दो पैर कटे, दो तो है" परन्तु तुरन्त ही उसकी कल्पना उसकी मजबूती सब असंवेदनशीलता की भेट चढ़ जाता हैं जब प्राणों की तरह प्रेम करने वाली उसकी सास कहती हैं - "बहु मेरे बेटे का क्या होगा? पूरी जिदंगी पड़ी हैं उसकी ।" यह कहना ही शालिनी को इस उपेक्षा अपंगता और अपूर्णता का एहसास कराता है जहाँ से व्यक्ति मानसिक तौर पर स्वयं की निशक्तता को स्वीकार कर लेता है । क्या रिश्ता या सम्बन्ध सिर्फ शारीरिक सौंदर्य से होता हैं । क्या रिश्तो में हृदय का लगाव इतना कमजोर हो गया है कि हम एक दुर्घटना मात्र से अपनों की उपेक्षा करने लगेंगे । शालिनी के घायलवस्था में ही लोग राजेश की दूसरी शादी की योजना बनाने लगते हैं । पैरों को हार कर भी हार न मानने वाली शालिनी अपनों की योजना से कांप जाती है- "राजेश की माँ बेटे को समझाओं । अभी वह नासमझ हैं दुनियादारी समझता नहीं । पूरी जिन्दगी पड़ी हैं उसकी ।गॉव की किसी गरीब लडकी से शादी कर दो उसकी । जो उसे भी संभालेगी और खटिया पर पड़ी अपाहिज सौत को भी ।" शालिनी को परिवार के सभी सदस्यों के मनोभावों को समझने में देर नही लगती हैं । वह स्वयं राजेश की दूसरी शादी के लिए तैयार हो जाती हैं । " स्त्री चाहे माँ के रूप में हो अथवा पत्नी के या फिर बेटी के, उसे पुरुष को समझते देर नहीं लगती । " [6]

मृदुला जी ने अपने आत्मकथात्मक उपन्यास "सीता पुनि बोली" में सीता के माध्यम से नारी की आत्मिक शक्ति के साथ मातृत्व की प्रतिष्ठा की हैं राम के वनवास मिलने पर अपने संकल्प की धृढता को प्रस्तुत करते हुए कहती हैं" आप जब तापस वेश धारण करेंगे तो क्या में रानी वेश सजूँगी । मै भी तापस वेश में वन जाउंगी ।" इस उपन्यास नें सीता अबला नही हैं । उसमें आत्मगौरव दर्शाता है इससे भारतीय नारी की आचरणशीलता ओर पतिव्रता धर्म को सीता के शक्ति संम्पन्न रूप के साथ संजोया गया हैं ।

इस उपन्यास में मृदुला जी की बेटी को दो परिवारों की लाज रखने वाली बताया है ससुराल व मायके की पहचान ही बेटी से होती है । सीता के स्वयंवर के उपरांत राजा जनक उसको जनकपुरी की सीमा तक छोड़ने जाते है और अपनी बेटी का सिर चूमकर बोलते है - "जाओ बेटी, अपने घर जाओ । दोनों कुल की लाज रखना । हर परिस्थिति में तुम्हे राम का साथ देना है । तुमसे राम और राम से तुम जानी जाओगी । ससुराल, परिवार के सदस्यों और प्रजाजनों के हृदय पर राज करना । ननद - देवर सबकी साम्राज्ञी बनना।"[7]

गर्भवती सीता, जहाँ पति द्वारा परित्यक्ता होकर वाल्मीकि आश्रम में अपने लवकुश जुड़वाँ पुत्रों को जन्म देकर ऐसी शिक्षा और संस्कार देती हैं कि वे दोनों अयोध्या के यशस्वी राजा बन सके, किन्तु आत्मविश्वासी व स्वाभिमानी वह नारी राम के प्रगाढ अनुभव विनय पर भी उनके साथ महारानी बनकर पुन: अयोध्या का राज भोगने के लिये तैयार नहीं होती ।

मृदुला जी ने स्त्री को पुरुष से श्रेष्ठ बताया है । वह पुरुष की सहगामिनी व पथ प्रदर्शक होती है । राम ने किष्किंधा के राजा बाली की मृत्यु के पश्चात सुग्रीव को राजा तथा बालिपुत्र अगंद को युवराज पद पर अभिषिक्त करवाया । महारानी तारा नें दोनों को सीता जी का पता लगाने में राम के सहयोगार्थ भेजा और कहा - "किष्किंधा की चिंता मत करो । तुम्हारे परोक्ष में सारी राज व्यवस्था में स्वयं देख लुंगी । यही बैठे - बैठे युद्ध क्षेत्र में तुम लोगो को सेना, खाद्यसामग्री और शस्त्रास्त्र भेजने में सहायता भी करुँगी । उसका दायित्व मेरा होगा ।" तारा बड़े आत्मविश्वास से बोल रही थी ।लेखिका के अनुसार "आप स्त्री होकर भी राजकाज चला सकती है ? "हाँ - हाँ, क्यों नहीं ! स्त्री - पुरुष में क्या अंतर होता हैं । यही न कि स्त्री संतान उत्पन्न कर सकती है, पुरुष नही । सांसारिक सारे कार्य स्त्री भी करती है, जो

पुरुष करते हैं । राजकाज चलाने में जो राजपुरुष पत्नी की सलाह लेता, वही सफल राजा होता है । उसकी कठोरतम राज व्यवस्था भी अद्रश्य ममता से सिंचित होती हैं । जो राजा अपनी रानी की सलाह नहीं लेता, वह निरंकुश हो जाता है - जैसे रावण, जैसे मेरे पूर्व पति बाली । उन्हें मुझ पर ही संदेह हो गया । इसलिए श्री राम ने उन्हें मारा । " [8]

"विजयनी" उपन्यास में एक पतिव्रता नारी के आदर्श को प्रस्तुत किया हैं । इसमें सती सावित्री अपने सत और तप से अपने पति सत्यवान की मृत्यु को जीवन में बदल देती हैं । अपने पति की मृत्यु पर संकल्प धारण करती हैं - "मैं सत्यवान के प्राण वापस लाऊंगी" और जब यमराज ने सावित्री से कहा की सत्यवान के प्राण के सिवा मुझसे दूसरा वर मांगों । । तब सावित्री ने कहा की " मेरे सास - ससुर अपनी आखों से पौत्र - पौत्रियों का मुँह देखे और में बलशाली, पराक्रमी और बुद्धियुक्त संतानों को जन्म दे सकूं। " [9]

इसमें मृदुला जी ने नारी के तप, कठिन निर्णय एवम् पतिव्रता होने का प्रमाण प्रस्तुत किया हैं । इसमें सावित्री की सास ने स्त्री की वास्तविक शक्ति का परिचय दिया हैं । "अब भी तुमने अपने ज्ञान, विनम्रता और सहनशीलता का ही परिचय दिया है । सहनशीलता और शील स्त्री के विशेष गुण होते हैं । इन्हीं गुणों के आधार पर वह पिता, पति, पुत्र, सास - श्वसुर और सेवक - सेविकाओं पर राज करती हैं । तभी तो साम्राज्ञी कहलाती है । पति के घर में लक्ष्मी का निवास हो न हो स्त्री तो साम्राज्ञी होती हैं । धनवान और धनहीन परिवारों में भी अपने परिवार और समाजहित गुणों के कारण सब पर राज करती हैं ।" [10]

सावित्री की माँ ने नारी का सम्बन्ध ससुराल व मायके दोनों से बताया है । वह ससुराल में अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए मायके से भी जुडी रहती हैं । "बेटी का विवाह कर ससुराल भेजने का अर्थ उसे सदा के लिए विदा करना नहीं होता । नारी के दो घर होते हैं । पिता के घर से विदा होने के उपरांत भी वहां से उसका सम्बन्ध बना रहता है और पिता के घर जाने पर विवाहित लड़की अपने घर - संसार के दायित्व निर्वहन से भी बच जाती हैं । इसलिए उसे मायका जाना सुखकर लगता हैं । यह परिवर्तन होते रहना चाहिए।"[11]

म्रदुला जी ने विजयनी उपन्यास में सत्यवान - सावित्री के वार्तालाप के माध्यम से स्त्री को पुरुष से श्रेष्ठ बताया हैं - "लड़कियों के अंदर प्रकृति ही कुछ विशेष संवेदनाएं भर देती हैं, जिनके बल पर वह प्रकृति और मनुष्य को भी लडकों से अधिक समझती हैं, बस! यह गुण तो हर स्त्री में होता हैं । इसी अंतर के कारण वह पुरुष से विशेष हो जाती हैं ।" [12]

"परितप्त लंकेश्वरी" उपन्यास में राजा रावण की पत्नी मंदोदरी के चरित्र को मानवीय गुणों से युक्त निश्छल संवेदनशील एवम् समर्पित चरित्र के रूप में उभारा गया हैं । मंदोदरी एक और अपने वीर अजेय एवम् शिवभक्त पति रावण के साथ मिले सुख एवम् सौभाग्य पर गर्व करती है तो दूसरी और अपने पति के क्रूर और कामलोलुप स्वाभाव को अपने आत्मिक शोर्य से टक्कर देती है । अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की जी तोड़ कोशिश करती रही, पर उसे वांछित सफलता नही मिल पाई लेकिन वह सत्य मार्ग से विचलित नहीं हुई । युद्ध में जब रावण की मृत्यु हो जाती है तब उसके उपरांत सीता को अयोध्या के लिए विदा कराते वक्त मंदोदरी के मुंह से अपने पति के लिए एक ही आकांक्षा स्वर निकलता हैं - "स्वर्गवासी की भूलों को क्षमादान दिया जाता हैं ।" [13]

आज के समय में पारिवारिक विघटन, अलगाव सम्बन्धों के नैतिक पतन के मध्य लेखिका ने मंदोदरी के चरित्र को सम्मान, कुशलता एवम दायित्व बोध के साथ उकेरने का प्रयास किया हैं । इस उपन्यास में मंदोदरी पारिवारिक एवम् सामाजिक समरता की प्रतिमूर्ति हैं । राजा के अत्यंत अराजक कृत्यों को देखकर वह रावण को क्रुर और निर्दयी कहती हैं । - "आपके पाप से लंका जल रही है । सारी शोभा मिट गयी । जहाँ मीठे जल के तड़ाग थे वहाँ लहू - ही - लहू हैं, सोने के सभी कंगूरे ढह गए । सारी वाटिकाएँ उजड़ गई । जगमग करती लंका अंधकार में डूब गई । क्या ऐसी लंका में सीता के साथ रंग - रास मनाओगे । देख लेना, सीता का स्पर्श करते ही झुलस जाओगे ।" [14]

निष्कर्ष: मृदुला सिन्हा के उपन्यासों में नारी की नियति पर गंभीरतापूर्वक विचार किया गया है । नारी जीवन के दर्द को बहुत गहराई से उभारा गया है । पारिवारिक रिश्तों के खोखलेपन तथा उसके उपजे नारी जीवन के त्रासदी का विश्लेषण दर्शित होता हैं । उनके अधिकतर उपन्यास परिवार और नारी के इर्द गिर्द घूमते हुए दिखाई देते हैं उनके बहुपक्षीय चिंतन ने भारतीय नारी की दृष्टि से आज की महिलायओं के परिवारिक जीवन के समसामयिकी जटिल प्रश्नों का गंभीरतापूर्वक मंथन किया हैं ।

सन्दर्भ सूची

1. मेरे साक्षात्कार, मृदुला सिन्हा - पृष्ठ 36, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली - 2008
2. आजकल, पृष्ठ 29, मार्च 2013
3. आजकल, पृष्ठ 24, मार्च 2013
4. घरवास, मृदुला सिन्हा, पृष्ठ 93, ज्ञान गंगा प्रकाशक दिल्ली, संस्करण - 2016
5. वही पृष्ठ - 101
6. 'ज्योंहँ मेहंदी को रंग', मृदुला सिन्हा, पृष्ठ - 53, प्रभात

प्रकाशक नई दिल्ली, संस्करण - 2016
7. सीता पुनि बोली - मृदुला सिन्हा, पृष्ठ - 58-59, विद्याविहार प्रकाशक नई दिल्ली संस्करण - 2016
8. वही पृष्ठ 198-199, अहल्या उवाच - मृदुला सिन्हा - भूमिका पृष्ठ 8
9. विजयिनी - मृदुला सिन्हा पृष्ठ -136, भारतीय पुस्तक परिषद नई दिल्ली - 2015
10. वही, पृष्ठ -28
11. वही, पृष्ठ -122
12. वही, पृष्ठ -157
13. परितप्त लंकेश्वरी, मृदुला सिन्हा, पृष्ठ 230, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली - 2015
14. वही, पृष्ठ - 211